चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक सवेरा........

दिनांक ..2-2-2021.. पृष्ठ संख्या.....7..... कॉलम.....2-8.....

किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा हकृवि

कुलपति ने कहा, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत व प्रदेश के किसानों के सहयोग का है नतीजा

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार का फोटो।

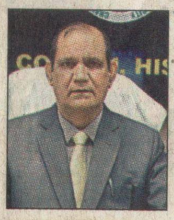

हिसार, 1 फरवरी (सुरेंद्र सोढी) : हरियाणा के खेतों में जादुई फसल प्रदान करने के लिए हिसार का चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और किसानों के बीच अदभुत रिश्ता कायम हो गया है। यही कारण है कि प्रदेश के किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। लाजवाब परिणाम यह कि हकृवि के वैज्ञानिकों ने तकनीक विकसित की और किसानों ने अपनाई तो फसलों की उन्नत किस्मों से देश का भंडारण कर हरियाणा अग्रणी प्रदेशों में शुमार हो गया है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व हकृवि के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है।

हरियाणा के किसान नंबर वन

देशभर के केंद्रीय खाद्यान भंडारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

विश्वविद्यालय के साथ लगातार जुड़ रहे हैं नए आयाम

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुं पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिली प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है।

किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं वैज्ञानिक

पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों व आधुनिक तकनीकों से प्रदेश का किसान समृद्ध और खुशहाल हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी लगातार किसानों को ध्यान में रखते हुए अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को विकसित किया गया है जिनमें 14 किस्में राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर के किसानों के लिए जारी की गई हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.........अमर उजाला.........

दिनांक 2-2-2021 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 3-4

देश के खाद्यान्न भंडारण में हरियाणा का 16 फीसदी तक हिस्सा : प्रो. समर सिंह

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस आज

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत के कारण उन्नत तकनीकों का ही नतीजा है कि आज हरियाणा का देश के खाद्यान्न भंडारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है।

खाद्यान्न भंडारण में हरियाणा का 16 फीसदी हिस्सा है। हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है, लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे, तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

हकृवि कुलपति प्रो. समर सिंह।

देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिला प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल है।

इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है। कुलपति ने कहा कि आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान्न भंडारण में प्रदेश का हिस्सा कुल भंडारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक ..2..2..2021..पृष्ठ संख्या...2.....कॉलम....4-7.....

'हकृवि के नए शोध कार्यों से बढ़ रहा कृषि उत्पादन'

हिसार, 1 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एम.ओ.यू. साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटैंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटैंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं।

ज्ञात रहे कि संयुक्त पंजाब में केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवम्बर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए

हकृवि के गेट-4 का फाइल फोटो।

हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है।

केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश की 16 प्रतिशत भागीदारी

आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हैक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। वैसे पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को विकसित किया गया है, जिनमें 14 किस्में राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर के किसानों के लिए जारी की गई हैं। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय ने गेहूं की डब्ल्यू.एच. 1187 व डब्ल्यू.एच. 1105 जैसी उन्नत किस्में विकसित की हैं, जिनका उत्पादन प्रति हैक्टेयर 61.2 क्विंटल से 71.6 क्विंटल तक आंका गया है।

इसी प्रकार बाजरे की 21, जौ की 8 किस्में, मक्का की 15, दलहन की 36, तिलहन की 29, कपास की 24, चारा की 34, गन्ने की 8, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की 8, सब्जियों की 27 और बागवानी की 4 किस्में विकसित की हैं। इसी प्रकार वर्ष 1966-67 में प्रदेश में चावल का उत्पादन मात्र 11.61 क्विंटल प्रति हैक्टेयर था। जो वर्ष 2000-01 में 25.57 क्विंटल प्रति हैक्टेयर और वर्ष 2019-20 में 33.34 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हो गया है। देश में औसतन चावल का उत्पादन 27.05 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है, जबकि प्रदेश में चावल का औसतन उत्पादन 33.34 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा चावल की 12 किस्में विकसित की गई हैं, जिनमें 11 किस्मों को प्रदेश व 1 किस्म को देशभर के लिए जारी किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक ..2..2..2021.... पृष्ठ संख्या.......4............. कॉलम.....7-8...........

फसलों की नई किस्में देने वाले विज्ञानियों को किया सम्मानित

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर सोमवार को कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें कुलपति प्रो. समर सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने गेहूं, बाजरा, ज्वार व जई की नई किस्में देने वाले विज्ञानियों को सम्मानित किया।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक टीम भावना से काम करते हुए दूसरों के लिए एक रोल मॉडल बनें। वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वह किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत हो सके।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं विश्व विख्यात पौध प्रजनन विज्ञानी डा. एके छाबड़ा ने बताया कि पिछले एक वर्ष में पौध प्रजनन विभाग ने 12 नई उन्नत किस्मों का विकास किया है। यह बड़ी उपलब्धि है क्योंकि एक किस्म को बनाने में 10-12 वर्ष का समय लगता है। इन किस्मों में जई, धान, गेहूं, मटर, बाजरा एवं तिलहन शामिल हैं। उन्होंने विज्ञानियों से आह्वान किया कि वे हमेशा किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखकर अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ाएं।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. बीआर कंबोज, कुलपति के ओएसडी डा. एमएस सिद्धपुरिया सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता व विज्ञानी मौजूद रहे।

इनको मिला सम्मान : गेहूं की नई किस्मों के लिए- डा. ओपी बिश्नोई, डा. विक्रम सिंह, डा. एसके सेठी, डा. एसएस ढांडा, डा. दिव्या फोगाट, डा. एमएस दलाल, डा. सोमवीर, डा. आईएस पंवार, डा. एके छाबड़ा, डा. योगेंद्र कुमार, डा. केडी सहरावत, डा. मुकेश सैनी, डा. कृष्ण कुमार, डा. वाईपीएस सोलंकी, डा. आरएस बेनीवाल, डा. रेनू मुंजाल, डा. भगत सिंह, डा. नरेश सांगवान, डा. आरएस कंवर, डा. प्रियंका, डा. राकेश पुनियां, डा. मुकेश कुमार, डा. निशा कुमारी, डा. बबीता व डा. हरबिंद्र सिंह को सम्मानित किया।

5

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 2.2.2021.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....1-4.....

गेहूं, जई, बाजरा की उन्नत किस्में विकसित करने वाले एचएयू के वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में आयोजित समारोह में इन वैज्ञानिकों की टीम को किया सम्मानित

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि एचएयू के वैज्ञानिक टीम भावना से काम करते हुए दूसरों के लिए एक रोल मॉडल के रूप में काम करें। टीम भावना से किए हर काम में न केवल सफलता सुनिश्चित है बल्कि दूसरों को प्रेरणा मिलती है। एचएयू का स्थापना दिवस आज मनाया जाएगा

वे एचएयू के स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर अपने-अपने क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने वाले वैज्ञानिकों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान्न भण्डारण में अहम योगदान है। इस दौरान गेहूं, बाजरा, ज्वार व जई की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एचएयू के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, कुलपति के ओएसडी डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया सहित सभी कॉलेजों के अधिष्ठाता व वैज्ञानिक मौजूद थे।

सम्मान समारोह के दौरान गेहूं, जई, बाजरा व दाना मटर की उन्नत किस्मों को विकसित करने वाले विवि के वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर गेहूं की किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पीएस सोलंकी, डॉ. आरएस बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह। जई की किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल, डॉ. आर.एस. श्योराण, डॉ. यूएन जोशी। बाजरा की किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज। दाना मटर को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर को सम्मानित किया गया। विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत और कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं विश्व विख्यात पौध प्रजनन वैज्ञानिक डॉ. एके छाबड़ा ने संबोधित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 2.2.2021...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1-4.....

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के साथ बेहतरीन कार्य करने वाले वैज्ञानिकों की टीम।

'उत्कृष्ट कार्य करने वाले एच.ए.यू. वैज्ञानिक सम्मानित'

हिसार, 1 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर अपने-अपने क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बेहतर कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करने को एक सराहनीय कदम बताया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं विश्व विख्यात पौध प्रजनन वैज्ञानिक डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि वैज्ञानिकों की अथक मेहनत से पिछले एक वर्ष में पौध प्रजनन विभाग ने 12 नई उन्नत किस्मों का विकास किया है। यह अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि एक किस्म को बनाने में 10-12 वर्ष का समय लगता है। इन किस्मों में जई, धान, गेहूं, मटर, बाजरा एवं तिलहन शामिल हैं।

इस अवसर पर गेहूं की किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फौगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी, डॉ. आर.एस. बैनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह, जई की किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल, डॉ. आर.एस. श्योराण, डॉ. यू.एन. जोशी, बाजरा की किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव व्रत, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चुघ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज, व दाना मटर को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	1.2.2021		

एचएयू किसानों के लिए साबित हो रही है मील का पत्थर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर विशेष

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत व प्रदेश के किसानों के सहयोग का ही नतीजा

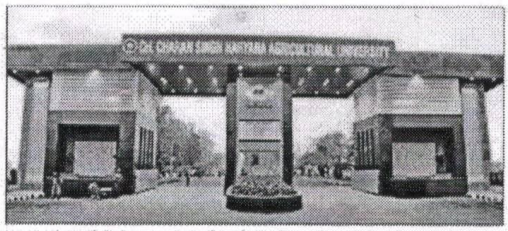

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान्न भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान्न उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान्न उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान्न भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

विश्वविद्यालय के साथ लगातार जुड़ रहे हैं नए आयाम : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिला प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम आल इंडिया रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है।

किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं वैज्ञानिक : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों व आधुनिक तकनीकों से प्रदेश का किसान समृद्ध और खुशहाल हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी लगातार किसानों को ध्यान में रखते हुए अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को विकसित किया गया है जिनमें 14 किस्में राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर के किसानों के लिए जारी की गई हैं। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1187 व डब्ल्यूएच 1105 जैसी उन्नत किस्में विकसित की हैं जिनका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 61.2 क्विंटल से 71.6 क्विंटल तक आंका गया है। इसी प्रकार बाजरे की 21, जौ की 8 किस्में, मक्का की 15, दलहन की 36, तिलहन की 29, कपास की 24, चारा की 34, गन्ने की 8, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की 8, सब्जियों की 27 और बागवानी की 4 किस्में विकसित की हैं। इसी प्रकार वर्ष 1966-67 में प्रदेश में चावल का उत्पादन मात्र 11.61 क्विंटल प्रति हेक्टेयर था। जो वर्ष 2000-01 में 25.57 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और वर्ष 2019-20 में 33.34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गया है। देश में औसतन चावल का उत्पादन 27.05 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जबकि प्रदेश में चावल का औसतन उत्पादन 33.34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा चावल की 12 किस्में विकसित की गई हैं जिनमें 11 किस्मों को प्रदेश व 1 किस्म को देशभर के लिए जारी किया गया है।

एक साथ सात सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने वाला पहला विश्वविद्यालय : उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एक साथ सात सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने वाला देश का पहला कृषि विश्वविद्यालय बन गया है। हिसार स्थित विश्वविद्यालय कैंपस, झज्जर, रोहतक, जींद, पानीपत, कुरुक्षेत्र व सिरसा के कृषि विज्ञान केंद्रों पर इन स्टेशनों को स्थापित किया गया है।

महिलाओं, युवाओं व किसानों के उत्थान के लिए प्रयासरत है विश्वविद्यालय : विश्वविद्यालय ग्रामीण व शहरी महिलाओं, युवाओं व प्रदेश के किसानों को स्वावलम्बी, समृद्ध और आर्थिक रूप से संपन्न बनाने की दिशा में प्रयासरत है। इसमें महिलाओं के लिए गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के कोर्स व सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान द्वारा कराए जाने वाले कोर्स व प्रशिक्षण शामिल हैं। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में कृषि अवशेष प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र स्थापित किया गया है, जिसके शुरू होने के बाद बायोगैस व सीएनजी गैस के साथ-साथ कृषि अवशेषों से खाद व बिजली उत्पादन भी शुरू हो जाएगा। दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र भी जैविक खेती की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय ने उत्तर भारत के एकमात्र व देश के दूसरे एग्री बिजनेस सेंटर की शुरूआत की है, जिसमें कोई भी किसान, युवा, गृहिणी, विद्यार्थी इत्यादि कृषि व कृषि से संबंधित इनोवेटिव आईडिया को लेकर इस केंद्र के माध्यम से अपना व्यवसाय स्थापित कर सकता है। फसल विविधिकरण, कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व बेहतर तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। बागवानी, कृषि वानिकी, मधुमक्खी पालन, पुष्प उत्पादन, पशुपालन, मुर्गीपालन, खुम्ब उत्पादन, मत्स्य पालन, केंचुआ खाद उत्पादन इत्यादि व्यवसाय अपनाकर किसान छोटी जोत होते हुए भी अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। उन्नत किस्मों के बीजों के प्रयोग, बीज उपचार, जैविक खाद, समन्वित कीट प्रबंधन, समन्वित खाद प्रबंधन, जैविक खेती एवं रासायनिक उर्वरकों के कम इस्तेमाल से किसान खेती में होने वाले खर्चे को कम करके आर्थिक रूप से ज्यादा समृद्ध हो सकते हैं। इसी प्रकार महिलाओं के लिए विश्वविद्यालय के प्रत्येक जिले में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से सिलाई-कढ़ाई, डेयरी फार्मिंग, फल व सब्जी इत्यादि को लेकर दिए जाने वाले प्रशिक्षण के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार स्थापित कर अपनी आजीविका चला सकती हैं। खेती से जुड़ी समस्याओं के निदान के लिए विश्वविद्यालय की निःशुल्क दूरभाष सेवा व मौसम से संबंधित जानकारी के लिए ई-मौसम के माध्यम से देश व प्रदेश के लाखों किसान लाभ उठा रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	1..2.2021		

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 2 फरवरी के स्थापना दिवस पर विशेष

एचएयू किसानों के लिए साबित हो रही है मील का पत्थर : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

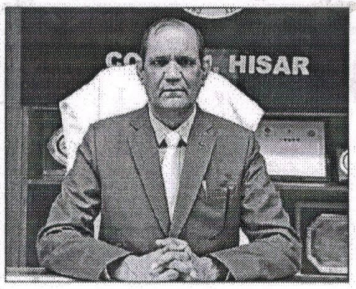

विश्वविद्यालय के साथ लगातार जुड़ रहे हैं नए आयाम

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की है जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिली प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है।

किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं वैज्ञानिक

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों व आधुनिक तकनीकों से प्रदेश का किसान समृद्ध और खुशहाल हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी लगातार किसानों को ध्यान में रखते हुए अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को विकसित किया गया है जिनमें 14 किस्में राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर के किसानों के लिए जारी की गई हैं। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1187 व डब्ल्यूएच 1105 जैसी उन्नत किस्में विकसित की है जिनका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 61.2 क्विंटल से 71.6 क्विंटल तक आंका गया है। इसी प्रकार बाजरे की 21, जौ की 8 किस्में, मक्का की 15, दलहन की 36, तिलहन की 29, कपास की 24, चारा की 34, गन्ने की 8, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की 8, सब्जियों की 27 और बागवानी की 4 किस्में विकसित की हैं। इसी प्रकार वर्ष 1966-67 में प्रदेश में चावल का उत्पादन मात्र 11.61 क्विंटल प्रति हेक्टेयर था। जो वर्ष 2000-01 में 25.57 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और वर्ष 2019-20 में 33.34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गया है। देश में औसतन चावल का उत्पादन 27.05 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जबकि प्रदेश में चावल का औसतन उत्पादन 33.34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा चावल की 12 किस्में विकसित की गई है जिनमें 11 किस्मों को प्रदेश व 1 किस्म को देशभर के लिए जारी किया गया है।

एक साथ सात सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने वाला पहला विश्वविद्यालय

उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एक साथ सात सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने वाला देश का पहला कृषि विश्वविद्यालय बन गया है। हिसार स्थित विश्वविद्यालय कैंपस, झज्जर, रोहतक, जींद, पानीपत, कुरूक्षेत्र व सिरसा के कृषि विज्ञान केंद्रों पर इन स्टेशनों को स्थापित किया गया है।

महिलाओं, युवाओं व किसानों के उत्थान के लिए प्रयासरत है विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय ग्रामीण व शहरी महिलाओं, युवाओं व प्रदेश के किसानों को स्वावलम्बी, समृद्ध और आर्थिक रूप से संपन्न बनाने की दिशा में प्रयासरत है। इसमें महिलाओं के लिए गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के कोर्स व सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान द्वारा कराए जाने वाले कोर्स व प्रशिक्षण शामिल हैं। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में कृषि अवशेष प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र स्थापित किया गया है, जिसके शुरू होने के बाद बायोगैस व सीएनजी गैस के साथ-साथ कृषि अवशेषों से खाद व बिजली उत्पादन भी शुरू हो जाएगा। दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र भी जैविक खेती की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय ने उत्तर भारत के एकमात्र व देश के दूसरे एग्री बिजनेस सेंटर की शुरूआत की है, जिसमें कोई भी किसान, युवा, गृहिणी, विद्यार्थी इत्यादि कृषि व कृषि से संबंधित इनोवेटिव आइडिया को लेकर इस केंद्र के माध्यम से अपना व्यवसाय स्थापित कर सकता है। फसल विविधिकरण, कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व बेहतर तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। बागवानी, कृषि वानिकी, मधुमक्खी पालन, पुष्प उत्पादन, पशुपालन, मुर्गीपालन, खुम्ब उत्पादन, मत्स्य पालन, केंचुआ खाद उत्पादन इत्यादि व्यवसाय अपनाकर किसान छोटी जोत होते हुए भी अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। उन्नत किस्मों के बीजों के प्रयोग, बीज उपचार, जैविक खाद, समन्वित कीट प्रबंधन, समन्वित खाद प्रबंधन, जैविक खेती एवं रासायनिक उर्वरकों के कम इस्तेमाल से किसान खेती में होने वाले खर्चे को कम करके आर्थिक रूप से ज्यादा समृद्ध हो सकते हैं। इसी प्रकार महिलाओं के लिए विश्वविद्यालय के प्रत्येक जिले में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से सिलाई-कढ़ाई, डेयरी फार्मिंग, फल व सब्जी इत्यादि को लेकर दिए जाने वाले प्रशिक्षण के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार स्थापित कर अपनी आजीविका चला सकती हैं। खेती से जुड़ी समस्याओं के निदान के लिए विश्वविद्यालय की निःशुल्क दूरभाष सेवा व मौसम से संबंधित जानकारी के लिए ई-मौसम के माध्यम से देश व प्रदेश के लाखों किसान लाभ उठा रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा टुडे	1.2.2021		

एचएयू किसानों के लिए साबित हो रही है मील का पत्थर : प्रो. समर सिंह

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 2 फरवरी के स्थापना दिवस पर विशेष

टुडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के साथ लगातार जुड़ रहे हैं नए आयाम : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिला प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है।

किसानों की समृद्धी के लिए प्रतिबद्ध हैं वैज्ञानिक

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों व आधुनिक तकनीकों से प्रदेश का किसान समृद्ध और खुशहाल हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी लगातार किसानों को ध्यान में रखते हुए अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को विकसित किया गया है जिनमें 14 किस्में राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर के किसानों के लिए जारी की गई हैं। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1187 व डब्ल्यूएच 1105 जैसी उन्नत किस्में विकसित की हैं जिनका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 61.2 क्विंटल से 71.6 क्विंटल तक आंका गया है। इसी प्रकार बाजरे की 21, जौ की 8 किस्में, मक्का की 15, दलहन की 36, तिलहन की 29, कपास की 24, चारा की 34, गन्ने की 8, औषधीय एवं सुगंधित पौधे की 8, सब्जियों की 27 और बागवानी की 4 किस्में विकसित की हैं। इसी प्रकार वर्ष 1966-67 में प्रदेश में चावल का उत्पादन मात्र 11.61 क्विंटल प्रति हेक्टेयर था।

महिलाओं, युवाओं व किसानों के उत्थान के लिए प्रयासरत है विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय ग्रामीण व शहरी महिलाओं, युवाओं व प्रदेश के किसानों को स्वावलम्बी, समृद्ध और आर्थिक रूप से संपन्न बनाने की दिशा में प्रयासरत है। इनमें महिलाओं के लिए गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के कोर्स व सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान द्वारा कराए जाने वाले कोर्स व प्रशिक्षण शामिल हैं। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में कृषि अवशेष प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र स्थापित किया गया है, जिसके शुरु होने के बाद बायोगैस व सीएनजी गैस के साथ-साथ कृषि अवशेषों से खाद व बिजली उत्पादन भी शुरू हो जाएगा। दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र भी जैविक खेती की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय ने उत्तर भारत के एकमात्र व देश के दूसरे एग्री बिजनेस सेंटर की शुरूआत की है, जिसमें कोई भी किसान, युवा, गृहिणी, विद्यार्थी इत्यादि कृषि व कृषि से संबंधित इनोवेटिव आइडिया को लेकर इस केंद्र के माध्यम से अपना व्यवसाय स्थापित कर सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	1.2.2021		

एचएयू किसानों के लिए साबित हो रही है मील का पत्थर : प्रोफेसर समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 1 फरवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब

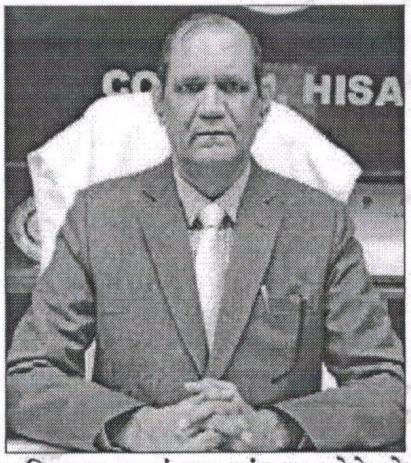

हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	1.2.2021		

हकृवि वैज्ञानिकों व किसानों का अटूट रिश्ता : कुलपति

हिसार/01 फरवरी/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है। हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिली प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है। उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय एक साथ सात सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने वाला देश का पहला कृषि विश्वविद्यालय बन गया है। हिसार स्थित विश्वविद्यालय कैंपस, झज्जर, रोहतक, जींद, पानीपत, कुरूक्षेत्र व सिरसा के कृषि विज्ञान केंद्रों पर इन स्टेशनों को स्थापित किया गया है। खेती से जुड़ी समस्याओं के निदान के लिए विश्वविद्यालय की नि:शुल्क दूरभाष सेवा व मौसम से संबंधित जानकारी के लिए ई-मौसम के माध्यम से देश व प्रदेश के लाखों किसान लाभ उठा रहें हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर-ए हरियाणा	1.2.2021		

वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता : प्रो. समर सिंह

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर विशेष

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक अटूट रिश्ता है, जिसकी बदौलत किसान विभिन्न फसलों के उत्पादन में दिन दौगुनी रात चौगुणी उन्नति कर रहा है। यह सब विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई और किसानों द्वारा अपनाई गई विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि आज प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में नाम है।

हालांकि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से काफी छोटा है लेकिन यहां के किसानों की मेहनत व एचएयू के वैज्ञानिकों के निरंतर प्रयासों की बदौलत इसकी देश में अलग पहचान है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पहले जब हरियाणा व पंजाब संयुक्त होते थे तब केवल एक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना होता था, लेकिन एक नवंबर 1966 को हरियाणा व पंजाब के अलग होने के बाद 2 फरवरी 1970 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। तब से लेकर निरंतर यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि जब प्रदेश संयुक्त पंजाब से अलग हुआ तो उस समय हरियाणा प्रदेश का वर्ष 1966-67 में खाद्यान उत्पादन केवल 2.59 मिलियन टन था। इसके बाद वर्ष 2000-2001 में बढ़कर 13.29 मिलियन टन हो गया और अब वर्ष 2019-20 में यह बढ़कर 17.86 मिलियन टन हो गया है। प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता व खाद्यान उत्पादन में अपार वृद्धि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अधिक पैदावार वाली विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करना, नई-नई तकनीकें इजाद करना, अथक प्रयासों, लगन, दूरगामी सोच और प्रदेश के किसानों की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। आज देशभर के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसमें गेहूं 9.3 मिलियन टन और चावल 4.2 मिलियन टन शामिल हैं। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश में नंबर वन है। अकेला हरियाणा प्रदेश देश का 60 प्रतिशत बासमती का उत्पादन करता है जबकि कुल चावल उत्पादन में प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इसी प्रकार दलहन व तिलहनी फसलों में बढ़ते उत्पादन को लेकर भी विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं वैज्ञानिक

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि पिछले 20 वर्षों में गेहूं व चावल के उत्पादन में रिकार्ड वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों व आधुनिक तकनीकों से प्रदेश का किसान समृद्ध और खुशहाल हो रहा है।

विश्वविद्यालय के साथ लगातार जुड़ रहे हैं नए आयाम

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के साथ लगातार नए आयाम जुड़ रहे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की 250 नई व उन्नत किस्में विकसित की हैं जो रोग प्रतिरोधी व अधिक पैदावार देने वाली हैं। अब तक 533 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमओयू साइन हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय को 17 पेटेंट, 5 कॉपीराइट और 2 डिजाइनों को स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अलावा 49 पेटेंट, 1 कॉपीराइट व 2 डिजाइन विश्वविद्यालय की ओर से स्वीकृति के लिए अप्लाई किए गए हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका है। इनमें से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मिली प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार व हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली प्रथम अटल रैंकिंग शामिल हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2019 के लिए जारी आईसीएआर रैंकिंग में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में तीसरा स्थान मिला है।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी लगातार उन्नत किस्में विकसित की हैं जिनका किसानों को ध्यान में रखते हुए अपने शोध उत्पादन प्रति हेक्टेयर 61.2 क्विंटल से 71.6 कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक क्विंटल तक आंका गया है। इसी प्रकार विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की 23 किस्मों को बाजरे की 21, जौ की 8 किस्में, मक्का की विकसित किया गया है जिनमें 14 किस्में 15, दलहन की 36, तिलहन की 29, राष्ट्रीय स्तर पर जबकि 9 किस्में प्रदेश स्तर कपास की 24, चारा की 34, गन्ने की 8, के किसानों के लिए जारी की गई हैं। औषधीय एवं सुगंधित पौधों की 8, मौजूदा समय में विश्वविद्यालय ने गेहूं की सब्जियों की 27 और बागवानी की 4 डब्ल्यूएच 1187 व डब्ल्यूएच 1105 जैसी किस्में विकसित की हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....हरिभूमि........

दिनांक 3.2.2021 पृष्ठ संख्या 9 कॉलम 2-8

लाइब्रेरी में दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी लगाई

हकृवि के 52वें स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में किसान हितैषी रिसर्च को लक्ष्य बनाने का संकल्प

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक कार्यालय की यात्रा भत्ता नियम पुस्तक और कृषि महाविद्यालय की बुकलेट कृषि में विश्वविद्यालय की भूमिका का लोकार्पण किया, किसानों से भी फसल विविधिकरण अपनाने की अपील की

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में हरियाणा सरकार के वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टी.वी.एस.एन. प्रसाद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने की। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्यातिथि ने कहा कि वैज्ञानिकों का मुख्य लक्ष्य किसान हितैषी रिसर्च होना चाहिए। इसके लिए वैज्ञानिकों को किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए व उनकी आमदनी बढ़ाने को लक्ष्य बनाकर अनुसंधान कार्य करना चाहिए ताकि रिसर्च के बेहतर परिणाम मिलें और किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो। उन्होंने किसानों से भी अपील करते हुए कहा कि फसल विविधिकरण को अपनाएं ताकि भूमि की उर्वरता बढ़ाई जा सके और नई किस्म के बीज रोपित करके पैदावार बढ़ाई जा सके। इससे जहां भूमि उपजाऊ होगी वहीं किसानों की आय भी बढ़ेगी।

खास बातें

- किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए काम किया जाए
- ऐसी वैज्ञानिक तकनीक विकसित करें जिससे ऐसी फसलों या सब्जियों को ज्यादा समय तक भण्डारण किया जा सके

नई तकनीक व नई किस्में विकसित करने का आह्वान

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने विश्वविद्यालय के कुलपति से आह्वान किया कि वे एक ऐसी नीति बनाएं जिसके तहत देश के सर्वोच्च संस्थानों के अनुसंधान वैज्ञानिकों को इस विश्वविद्यालय में बुलाया जाए ताकि अन्य वैज्ञानिकों के लिए भी उनसे प्रेरणा मिल सके। मुख्यातिथि ने कहा कि विश्वविद्यालय में और अधिक ऐसी तकनीक व विभिन्न फसलों की किस्मों को विकसित करें ताकि उसका न केवल प्रदेश बल्कि अन्य प्रदेशों के किसानों को और अधिक लाभ मिल सके।

हिसार। कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्यातिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद। फोटो : हरिभूमि

खेती घाटे का सौदा न बने

उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों को विकसित करें जिससे खेती घाटे का सौदा न बने। उन्होंने किसानों से भी फसल विविधिकरण अपनाने की अपील की। साथ ही ऐसी वैज्ञानिक तकनीक विकसित करें जिससे ऐसी फसलों या सब्जियों को ज्यादा समय तक भण्डारण किया जा सके जिनके जल्द ही खराब होने की संभावना हो। ऐसा करने से किसान अपनी फसल का भाव अपने हिसाब से हासिल कर पाएंगे और अधिक मुनाफा कमा सकेंगे। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन

विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की पौधशाला के कार्यलाय एवं भण्डारण व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के प्रतीक चिन्ह का उद्घाटन किया गया। स्थापना दिवस समारोह का आयोजन कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज की देखरेख में किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक कार्यालय की यात्रा भत्ता नियम पुस्तक और कृषि महाविद्यालय की बुकलेट कृषि में विश्वविद्यालय की भूमिका का लोकार्पण किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 3.2.2021...पृष्ठ संख्या....4.....कॉलम...7-8.....

किसान हितैषी रिसर्च को मुख्य लक्ष्य बनाएं वैज्ञानिक : प्रसाद

हकृवि में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते कुलपति व अन्य।

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में हरियाणा सरकार के वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने की। इस दौरान मुख्यातिथि ने कहा कि वैज्ञानिकों का मुख्य लक्ष्य किसान हितैषी रिसर्च होना चाहिए।

इसके लिए वैज्ञानिकों को किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए व उनकी आमदनी बढ़ाने को लक्ष्य बनाकर अनुसंधान कार्य करना चाहिए ताकि रिसर्च के बेहतर परिणाम मिलें और किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो।

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि इसकी स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय का देश के कृषि क्षेत्र में अहम योगदान रहा है। विश्वविद्यालय की बदौलत आज देश के खाद्यान्न भंडारण में प्रदेश की मुख्य भूमिका है। इसके अलावा इस अवसर पर दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की पौधशाला के कार्यालय एवं भंडारण व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के प्रतीक चिह्न का उद्घाटन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक भास्कर........

दिनांक ..3..2..2021... पृष्ठ संख्या.....2........... कॉलम....3-6..........

कृषि क्षेत्र की समस्याओं को समझकर किसान हितैषी रिसर्च पर फोकस करें वैज्ञानिकः प्रसाद

एचएयू के स्थापना दिवस पर यूनिवर्सिटी में विभिन्न कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के 52वें स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों में हरियाणा सरकार के वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने की। इस अवसर पर टीवीएसएन प्रसाद ने कहा कि हमेशा वैज्ञानिकों का मुख्य लक्ष्य किसान हितैषी रिसर्च करना होना चाहिए।

एचएयू के स्थापना दिवस पर दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते मुख्यातिथि टीवीएसएन प्रसाद।

स्थापना दिवस के मौके पर दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की पौधशाला के कार्यालय एवं भण्डारण व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के प्रतीक चिह्न का उद्घाटन किया गया। साथ ही वित्त नियंत्रक कार्यालय की यात्रा भत्ता नियम पुस्तक और कृषि महाविद्यालय की बुकलेट कृषि में विश्वविद्यालय की भूमिका का लोकापर्ण किया गया। समारोह का आयोजन कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज की देखरेख में किया गया।

फसलों की 250 से अधिक किस्मों को किया विकसित

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने अब तक विभिन्न फसलों की करीब 250 से अधिक किस्मों को विकसित किया है जिसकी बदौलत फसल उत्पादन में प्रदेश दिन दोगुनी रात चोगुनी उन्नति कर रहा है। स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय के सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों व अन्य अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पंजाब केसरी......

दिनांक 3.2.2021 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6-8

किसान हितैषी रिसर्च को मुख्य लक्ष्य बनाएं वैज्ञानिक : प्रसाद'

हकृवि के स्थापना दिवस पर कई कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम को सम्बोधित करते मुख्यातिथि टी.वी.एस.एन. प्रसाद व मंच पर मौजूद महाविद्यालय के अधिकारी।

हिसार, 2 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के 52वें स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस मौके वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टी.वी.एस.एन. प्रसाद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति ने की। मुख्यातिथि ने कहा कि वैज्ञानिकों का मुख्य लक्ष्य किसान हितैषी रिसर्च होना चाहिए। इसके लिए वैज्ञानिकों को किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए व उनकी आमदनी बढ़ाने को लक्ष्य बनाकर अनुसंधान कार्य करना चाहिए, ताकि रिसर्च के बेहतर परिणाम मिलें और किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो। विश्वविद्यालय में और अधिक ऐसी तकनीक व विभिन्न फसलों की किस्मों को विकसित करें, जिनसे न केवल प्रदेश, बल्कि देश के किसानों को और अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों को विकसित करें जिससे खेती घाटे का सौदा न बने। उन्होंने किसानों से भी फसल विविधिकरण अपनाने की अपील की।

मुख्यातिथि ने विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर 2 दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की पौधशाला के कार्यालय एवं भण्डारण व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के प्रतीक चिन्ह का उद्घाटन किया। स्थापना दिवस समारोह का आयोजन कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज की देखरेख में किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रबंधक मण्डल की सदस्य सुदेश चौधरी, सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण, दैनिक ट्रिब्यून

दिनांक 3.2.2021 पृष्ठ संख्या 6, 7 कॉलम 7-8, 1-2

सब्जियों का अधिक दिन भंडारण की तकनीक खोजें : एसीएस वित्त

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 52वां स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए। विज्ञानी ऐसी तकनीकों को विकसित करें जिससे खेती घाटे का सौदा न बने। किसानों से भी फसल विविधिकरण अपनाना चाहिए। विज्ञानी ऐसी तकनीक विकसित करें जिससे ऐसी फसलों या सब्जियों को ज्यादा समय तक भंडारण किया जा सके जिनके जल्द ही खराब होने की संभावना हो। ऐसा करने से किसान अपनी फसल का भाव अपने हिसाब से हासिल कर पाएंगे और अधिक मुनाफा कमा सकेंगे। विवि के स्थापना दिवस पर दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की पौधशाला के कार्यालय एवं भंडारण व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के प्रतीक चिन्ह का उद्घाटन किया गया। किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए व उनकी आमदनी बढ़ाने को लक्ष्य बनाकर अनुसंधान कार्य करना चाहिए ताकि रिसर्च के बेहतर परिणाम मिलें।

'किसान हितैषी रिसर्च को मुख्य लक्ष्य बनाएं वैज्ञानिक'

हिसार (निस) चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में हरियाणा सरकार के वित विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद मुख्यातिथि थे। विश्वविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए वित विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद ने कहा कि वैज्ञानिकों का मुख्य लक्ष्य किसान हितैषी रिसर्च होना चाहिए। इसके लिए वैज्ञानिकों को किसानों की आमदनी बढ़ाने को लक्ष्य बनाकर अनुसंधान कार्य करना चाहिए।